Class XII (Hindi)

50 Sure Shot Question-Answer

हिन्दी प्रश्नोत्तर

(1) 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता के आधार पर बताइए कि बच्चे किस आशा में नीडों से झाँक रहे होंगे ?

(2) 'जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास' यहाँ कपास और बच्चों में संबंध बताया गया है?

(3) **'**कैमरे में बंद अपाहिज**'** कविता का संदेश अपने शब्दों में लिखिए।

(4)'उषा**'** कविता में उषा की सुन्दरता को कवि ने कौन**-**कौनसे उपमान देकर दर्शाया है**?**

(5)'कविता के बहाने**'** कविता में कवि ने कविता और बच्चों में क्या समानता तथा असमानता बताई है **?**

(6) फ़िराक की गज़ल में प्रेम एवं सौन्दर्य का चित्रण कैसे किया गया है?

(7) काव्यांश को पढ़कर उसका भाव-शिल्प सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए ।

हँसते हैं छोटे पौधे लघुभार

शस्य अपार

हिल हिल

खिल खिल

हाथ हिलाते

तुझे बुलाते।

विप्लव-रव से छोटे ही है शोभा पाते।

(8) **प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे**

भोर का नभ

राख़ से लीपा हुआ चौका

(अभी गीला पड़ा है)

बहुत काली सलि जरा से लाल केसर से

क जैसे धुल गई हो

स्लेट पर या लाल ख़ड़यिा चाक

मल दी हो कसिी ने ।

1) कविता में आए उपमा अलंकार के दो उदाहरण लिख़िए।

2) कविता की भाषा-शैली की तीन वशिषताएं लिख़िए ।

(9) 'चाँद के टुकड़े' का प्रयोग कसिके लिए हुआ है और क्यों ?

(10) 'कविता के बहाने**'** कविता में कव ने कविता और फूलों में क्या समानता तथा असमानता बताई है **?**

(11) 'कैमरे में बंद अपाहजि' कविता मीडयिा की क्रूरता को दर्शाती है।कैसे?

(12) जन्म से ही वे अपने साथ लाते है -कपास-यहाँ कपास और बच्चों में क्या समानता बताई गई है ?

(13) कसिी एक काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

जाने क्या रश्िता है,जाने क्या नाता है

जतिना भी उड़ेलता हूँ,भर-भर फ़रि आता है

दलि में क्या झरना है ?

मीठे पानी का सोता है

भीतर वह,ऊपर रुम

मुस्काता चाँद ज्यों धरती पर रात-भर

मुझ पर त्यों तुम्हारा ही खलिता वह चेहरा है।

1- ‘दिल में क्या झरना है ? मीठे पानी का सोता है ?’ का लाक्षणिक अर्थ लिखिए।

2- ‘मुस्काता चाँद ज्यों धरती पर रात-भर ,मुझ पर त्यों तुम्हारा ही खिलता वह चेहरा है।‘ का अभिप्राय लिखिए।

3- कविता में आए अलंकरों के नाम लिखिए।

(14) हनुमान का आगमन करुणा में वीर रस का अवतार कैसे कहा जा सकता है ?

(15)लच्छे किसे कहा गया है और इनका संबंध किस त्योहार से है ?

(16) ‘छोटा मेरा खेत’ किसका प्रतीक है और क्यों ?

(17) कवि ने दरिद्रता को किसके समान बताया है और क्यों ?

(18) ख़ेत की तुलना किससे की गई है और क्यों ?

(19) कवि **‘**विप्लव के वीर**’** और **‘**जीवन के पारावार**’** किसे कहता है और क्यों **?**

(20) [illegible] **‘**[illegible]**,**[illegible] **?**

(21) [illegible]**-**[illegible] **‘**[illegible]**’ ?**

(22)**‘**[illegible]**’**[illegible]

(**23**)’भक्तिन’ पाठ के आधार पर भक्तिन की चारित्रिक विशेषताएं लिख़िए।

अथवा

’भक्तिन अच्छी है पर उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं।‘लेख़िका के इस कथन के आलोक में भक्तिन के चरित्र की विशेषताएं लिख़िए।

(24) भक्तिन के जीवन को कितने परिच्छेदों/अध्यायों में बाँटा जा सकता है? उनका वर्णन भी कीजिए.

(25) ‘जीवन में प्राय: सभी को अपने-अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पडता है.’ अपने आस-पास के दो व्यक्तियों के नाम के उदाहरण देते हुए इसा कथन को समझाइए.

(26) बाजार का जादू क्या है?उसके चढ़ने-उतरने का मनुष्य पर क्या प्रभाव पड़ता है?

(27)बाजार को सार्थकता कौन दे सकता है और कैसे ?

(28)पहलवान अपना गुरु किसे मानता था और उसे गुरु मानने के क्या कारण रहे होंगे **?**

(29)‘पहलवान की ढोलक**’** कहानी के आधार पर लिखिए कि पहलवान के जीवन में क्या**-**क्या परिवर्तन आए**?**

(30) लुट्टन पहलवान की ढोलक का पूरे गाँव पर क्या असर पड़ता था? (ड़)

(31)जीजी ने इन्दर सेना पर पानी फ़ेंके जाने को किस तरह सही ठहराया?

(32)-इन्दर सेना सबसे पहले गंगा मैया की जय क्यों बोलती है ? नदियों का भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में क्या महत्व है ?

(33)चार्ली चैप्लिन का भारतीय संस्करण किसे कहा गया है और क्यों **?**

(34) लेखक ने कालजयी अवधूत किसे कहा है और क्यों ?

(35)‘मानचित्र पर एक लकीर खींच देने से जमीन और जनता बँट नहीं जाती है ‘-उचित तर्कों एवं उदाहरण देकर समझाइए।

(36) अंबेडकर के मत से मनुष्य की क्षमता किन बातों पर निर्भर करती है?

(37) चार उदाहरण देकर समझाइए कि ‘सिल्वर वेडिंग’ कहानी में दो पीढ़ियों के अन्तराल को उभारा गया है। कैसे?

अथवा

’सिल्वर वेडिंग’ कहानी दो पीढ़ियों की सोच,मूल्यों और भावनाओं के अन्तराल को दर्शाती है। पाठ के आधार पर लिख़िए ।

(38) चार्ली चैप्लिन की फ़िल्मों की विशेषताएं लिखिए।

(39) **‘चटाई का लहंगा’ किसे कहा गया है और क्यों ?**

(40) ‘जूझ’ कहानी के शीर्षक की सार्थकता को लेख़क आनंद यादव के जीवन के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

(41)श्री सौदलगेकर के अध्यापन की उन विशेषताओं का उल्लेख़ कीजिए जिन्होंने आनंद यादव को कविता के प्रति आकर्षित किया ।

(42) ’जूझ’ शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए ।

(43)’जूझ’ के लेख़क की कौन-कौनसी विशेषताएं आपको प्रभावित करती है और क्यों ?

(44) क्या सिन्धु घाटी सभ्यता जल-सभ्यता थी ? यदि हां, तो कैसे ?

(45)’सिन्धु सभ्यता का सौन्दर्य-बोध समाज-पोषित था’-‘अतीत में दबे पाँव’ पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए ।

(46) सिन्धुघाटी सभ्यता के मोहनजोदड़ो शहर की विशेषताएं लिख़िए ?

(47)‘सिन्धु-सभ्यता की खूबी उसका सौन्दर्य-बोध है जो राज-पोषित या धर्म-पोषित न होकर समाज-पोषित था।‘ ऐसा क्यों कहा गया है ?

(48) ’डायरी के पन्ने’ के आधार पर बताए कि युद्ध के समय यहूदियों के प्रति जिन-भावना कैसी थी ?

अथवा

‘डायरी के पन्ने’ में द्वितीय विश्व-युद्ध में जर्मनी सेना के द्वारा यहूदियों पर किए गए अमानवीय अत्याचार को बारीकी से उभारा गया है।‘ इस कथन के पक्ष में तर्क दीजिए।

?

(49) ऐन फ़्रेंक कौन थी और उसकी डायरी क्यों प्रसिद्द हुई ?

(50)’ऐन फ़्रेंक की डायरी लेख़िका के निजी जीवन की उलझनों के साथ-साथ ऐतिहासिक दौर का जीवंत दस्तावेज है।‘पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए ।

$$$$$$$$$$$$$$$

प्रश्नोत्तर

1 बच्चे नीड़ों से झांक रहे होंगे कि उनके माता-पिता शाम को घर आएंगे और उन्हें दाना-पानी खिलाएंगे -पिलाएंगे तथा ढेर सारा प्यार देंगे। सुबह से उन्हे छोड़कर गए उनके माता- पिता उन्हें पाकर खुश भी होंगे।

2 कपास बहुत हल्की,मुलायम,गद्देदार और चोट सहने में समर्थ होती है। यही गण बच्चों में भी होते हैं। वे हल्के-फ़ुल्के,कोमल,छरहरे और चोट सहने में समर्थ होते हैं।

3 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता करुणा के व्यापारियों पर तीख़ा व्यंग्य है। मीडियाकर्मी अपने चैनल को लोकप्रिय बनाने के लिए जानबूझकर लोगों के ज़ख़्म कुरेदते हैं। वे अपाहिज की मजबूरी को,उनकी दीनता और दुःख़ को जान-बुझकर उभारते हैं ताकि लोग उन्हें देख़ने के लिए चैनल से चिपके रहें। वास्तव में किसी अपाहिज के भूले हुए दर्द से अपना धंधा चलाना अत्यंत घिनौना और क्रूर कर्म है।मीदिया की घोर व्यावसायिकता को उभारा गया है जो समाज हित के नाम पर अपना हित तथा स्वार्थ पूरा करता है ।

4 कवि के अनुसार प्रात: का उगता सूर्य अपनी लालिमा नीले आसमान ऐसे बिखेर रहा है जैसे नीले शंख में लाली हो,जैसे काली सिल पर सिन्दूर बिखेर दिया गया हो,जैसे किसी स्लेट पर बच्चे ने लाल खड़िया मल दी हो,जैसे रात का लीपा हुआ आँगन अभी तक गीला पड़ा हो।

5) 'कविता के बहाने' कविता में कवि ने कविता और बच्चों में निम्निांकित समानता तथा असमानता बताई है - समानताएं - बच्चे प्रत्येक घर में खेलकूद सकते हैं ,वैसे ही कविता भी हर घर में खेल / पढ़ी जाती है। बच्चों की भांति कविता भी सभी को आनंद प्रदान करने वाली होती है। असमानताएं - बच्चों के खेलकूद की कोई सीमा नहीं होती है लेकिन कविता की और उसके पढ़ने की सीमा होती है ।

6 फ़िराक गोरख़पुरी की दृष्टि में प्रेम और सौन्दर्य मन की पवित्र भावन्न तथा नजर है और इसे अनुभूत किया जा सकता है न कि अभिव्यिक्त। कवि अपनी प्रिया की याद में रात-दिन रोता रहता है। प्रेम-सौन्दर्य अमर है।

7 भाव-सौन्दर्य- निराला बादलों को बरसने का निवेदन करते लिखते है कि हे बादलों ! तुम्हारे गरजने और बरसने से इस धरती में दबे पड़े छोटे-छोटे बीज ही अंकुरित होकर धरती की हरियाली बढ़ाते हैं। बारिश से वे ही शोभा पाते है और खिल-खिलकर,हिल-हिलकर वे ही अपने सौन्दर्य -अस्मिता पर इतराते हैं। अर्थात गरीबों-मजदूरों का ही उद्धार होता है।

शिल्प-सौन्दर्य- भाषा-खड़ीबोली हिन्दी है जिसमें संस्कृत शब्दों की बहुलता है।स्थिर बिम्बों,ध्वन्यात्मक बिम्बों तथा नवीन प्रतीकों का प्रयोग हुआ है। खिल-खिलकर,हिल-हिलकर में पुनरुक्ति है। विप्लव-रव-=क्रांति का तथा छोटे पौधे= गरीबों-मजदूरों के प्रतीक है।

8 ’नीले शंख़’ और ‘राख़ से..............गीला पड़ा है’ में उपमा अलंकार है। अत्यंत छोटे शब्दों-नील्ल,शंख़,राख़-का सार्थक प्रयोग मौलुक कल्पना और नवीन उपमानों के साथ हुआ है।चित्रण में बिम्ब-विधान और चित्रात्मकता की अद्भुत शक्त है।भाषा ख़ड़ीबोली हिन्दी है।

9 ‘चाँद के टुकड़े’ का प्रयोग माँ की गोद में लेटे बच्चे के अद्वितीय मुखड़े के लिए हुआ है क्योंकि वह चाँद की तरह हमेशा निदाग और खिलखिलाकर हँसता रहता है,सबका प्रिय है।

10 **‘**कविता के बहाने**’** कविता में कवि ने कविता और फूलों में निम्नांकित समानता तथा असमानता बताई है **-** <u>समानताएं </u>- फूल प्रत्येक जगह तथा बगीचे में महकते हैं तथा सभी को सुगंध देते हैं **,**वैसे ही कविता भी हर घर में खेल / पढ़ी जाती है और सभी को फूलों की भांति कविता भी आनंद प्रदान करने वाली होती है। असमानताएं - फूल महककर तथा महकाकर कुछ समय बाद मुरझा जाते हैं लेकिन कविता को पढ़ने और उसके आनंद की कोई सीमा नहीं होती है । वह जीवनभर लोगों को महकाती रहती है ।

11 ‘कैमरे में बंद अपाहिज’ कविता करुणा के व्यापारियों पर तीख़ा व्यंग्य है। मीडियाकर्मी अपने चैनल को लोकप्रिय बनाने के लिए जानबूझकर लोगों के जख़्म कुरेदते हैं। वे अपाहिज की मजबूरी को,उनकी दीनता और दुःख़ को जान-बुझकर उभारते हैं ताकि लोग उन्हें देख़ने के लिए चैनल से चिपके रहें। वास्तव में किसी अपाहिज के भूले हुए दर्द से अपना धंधा चलाना अत्यंत घिनौना और क्रूर कर्म है।

12 कपास बहुत हल्की,मुलायम,गद्देदार और चोट सहने में समर्थ होती है। यही गण बच्चों में भी होते हैं। वे हल्के-फ़ुल्के,कोमल,छरहरे और चोट सहने में समर्थ होते हैं।

13 क) ‘दिल में क्या झरना है ? मीठे पानी का सोता है-का लाक्षणिक अर्थ है-दिल में प्रेम की मिठास इतनी भरी है कि बार-बार झरने के रुप में झरती रहती है,कम नहीं होती,अनवरत बहती रहती है।

ख) धरती के ऊपर जैसे चाँद की चाँदनी बिखरी रहकर उसे उजाला और प्रेम देती है ,वैसे कवि के मन पर उसकी प्रेमिका की प्रेम-चाँदनी का पहरा बना रहता है।

ग) मुस्काता चाँद ज्यों धरती पर रात-भर -उत्प्रेक्षा अलंकार

मुझ पर त्यों तुम्हारा ही खलिता वह चेहरा है।

14 हनुमान का आगमन करुणा में वीर रस का अवतार कहा गया है क्योंकि लक्ष्मण के शक्ति-बाण लगने पर राम और सम्पूर्ण वानर-सेना करुणा तथा निराशा में डूबे होते है कि अब तक हनुमान संजीवनी लेकर नहीं आए।लेकिन अचान्क हनुमान संजीवनी बूटी लेकर राम के चरणों में झुकते हैं तो लक्ष्मण के जीवित होने की आशा प्रबल हो उठती है और सभी में जोश आ जाता है।

15 चमकते लच्छे भाई की कलाई पर बहन द्वारा बाँधे गए धागों को कहा गया है जो अँधेरी रात में भी बिजिली की तरह चमक रहे हैं। चमकते लच्छे का संबंध रक्षाबन्धन के त्योहार से है।

जैसे बिजिली चमककर अंधेरे में रास्ता दिखाती है वैसे ही भाई की कलाई पर बंधी राखी चमककर अच्छाई और विश्वास का रास्ता दिखाती है।

16 -‘छोटा मेरा खेत’ कागज के चोकोर टुकड़े का प्रतीक है। जिस प्रकार खेत चोकोर होता है जिसमें फ़सल उगाई जाती है, वैसे ही कागज का टुकड़ा भी चोकोर होता है जिस पर कविता के अक्षर लिखे जाते हैं।

17 तुलसीदास ने दरिद्रता को आततायी रावण के समान बाताया है क्योंकि दरिद्रता दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है।इससे लोग भूखों मर रहे हैं और परेशान हैं।जैसे रावण के अत्याचारों से जनता त्रस्त रहती थी वैसे ही गरीबी के कारण तदयुगीन जनता त्रस्त है।

18 -‘छोटा मेरा खेत’ कागज के चोकोर टुकड़े का प्रतीक है। जिस प्रकार खेत चोकोर होता है जिसमें फ़सल उगाई जाती है वैसे ही कागज का टुकड़ा भी चोकोर होता है जिस पर कविता के अक्षर लिखे जाते हैं।

19 ’विप्लव के वीर’ और ‘जीवन के पारावार’ बादलों को कहा गया है,क्योंकि बादल जल-प्लावन लाकर सूखे का विनाश करते हैं और धरती के गर्भ में सोए हुए अंकुरों को नया जीवन प्रदान करते हैं।

20 कवि पाठकों की आँख़ों के सामने पतंग के रुप,रंग तथा भार को साकार करने के लिए,उनका ध्यान आकर्षण करने के लिए पतंग को सबसे हलकी,सबसे रंगीन,सबसे पतला और सबसे पतली विशेषणों का प्रयोग करता है।

21 कवि ने अपने सुख़-दुख़ की अनुभूति,गिर्बीली गरीबी,गहरे अनुभव,प्रौढ़ विचार,व्यक्तित्व की दृढ़ता,नूतन भावनाओं का बहता हुआ प्रवाह,अपने प्रिय का प्रेम आदि सहर्ष स्वीकारा है।

22 'हम समर्थ शक्तिवान' में व्यंग्य है कि मीडिया वाले सवयं को बहुत शक्तिशाली और सबका भाग्यविधाता मानते हैं। अन्य अर्थ में यह अपंग की तुलना में सामान्य आदमी का प्रतीक है।'दुर्बल को लाएँगे' का अर्थ है कि दिया,लाचारी और प्रदर्शन का भाव होना।मीडिया वाले दुर्बल,अपंग,अपाहिज को सबके सामने लाकर उसका तमाशा बनाएंगे,उस पर टीका-टिप्पणी करेंगे।

23 महादेवी की सेविका भक्तिन सेवा भावी,ममत्व भरी,आदर,समर्पण से पूर्ण,लेख़िका का ख़्याल रख़ने वाली है। लेकिन वह कठोर,कर्कश,दुराग्रही,कुछ चोर अवभाव,और दुराग्रह से परिपूर्ण भी है। हमें भक्तिन की सेवा भावना,पवित्रता,सहयोगी भावनाए अच्छी लगी।

24 भक्तिन के जीवन को चार परिच्छेदों/अध्यायों में बाँटा जा सकता है- एक - वह गोपालक की कन्या थी और उसका नाम लक्ष्मी रखा गया था कि वह जीवन भर सुखी तथा सम्पन्न रहेगी। सौतेली मां ने बचपन में ही उसकी शादी करावा दी । दूसरा -शादी के बाद वह ससुराल में रहकर तीन कन्याओं की मां बनी और देवरानी -जेठानी तथा सास के अवांछित अत्याचार सहे । तीसरा-उसने कठोर मेहनत की । अपनी बेटियों की शादी करवा दी । मेहनत से वह सुखी रहने लगी। उसके सुखों से सभी चिढ़ने लगे और उसे कष्ट देने लगे। उसकी जिठानी के भाई ने लक्ष्मी की विधिवा बेटी के साथ मुंह काला किया। उधर पंचायत ने दोनों की शादी करवा दी । चौथा- लक्ष्मी घरबार छोड़कर इलाहाबाद लेखिका के यहां आ गई सेविका बनाकर और सेवक-भाव से लेखिका की सेवा करने लगी ।

25'जीवन में प्राय: सभी को अपने-अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पडता है.'उदाहरण -भक्तिन का नाम लक्ष्मी था लेकिन उसे जीवनभर अभावों,कष्टों और गरीबी में जीना पड़ा । हमारे पड़ोस में रानी लामक लड़की भीख मांगकर अपना जीवन चला रही है । शांति नाम की लड़की उसके नाम के विपरीत एकदम अशांत और महाक्रोधी है।

26 बाजार का जादू- आदमी बाजार की आकर्षक वस्तुओं के वश में हो जाता है,उसे कहा गया है और उसके चढ़ने-उतरने का मनुष्य बहुत प्रभाव पड़ता है,जैसे-बाजार का जादू चढ़ने पर आदमी बाजार की आकर्षक वस्तुओं के वश में हो जाता है।वह लालच मेंआकर गैर जरुरी चीजों को ख़रीदता चला जाता है।परंतु जब जादू उतरता है तो उसे पता चलता है कि वे वस्तुएँ उसे आराम देने की बजाय उसके आराम में ख़लल डाल रही है और उसने पैसा फ़ालतू बहाया।

27 बाजार को सार्थकता भगतजी जैसे संतोषी प्रवृति के लोग दे सकते है। जो बाजार से पंसेरी की दुकान पर जाकर आवश्यक सामान ले आते और बाकी सामान बिछा का बिछा रह जाता है। हमें बाजर जाते समय घर में आवश्यक चीजों की सूची तैयार कर देनी चाहिए ताकि बाजार में जाकर भीड़ न बढ़ाए औए जरूरी चीजें लेकर आए।

28 लुटटन पहलवान ढोलक को ही अपना गुरु मानता था क्योंकि बिचपन से लेकर पहलवान बनने तक एकमात्र ढोलक ही उसकी साथी रही है। डोलक की थाप और आवाज की उटठापटक के साथ ही लुट्टन ने दाँव-पेंच काटना सीखा। ढोलक की आवाज ही उसके लिए कुश्ती-पहलवानी का प्रेरणा स्रोत रही है,जैसे-ढाक -ढिना, ढाक ढिना, ढाक -ढिना अर्थात उठाकर पटक दे, उठाकर पटक दे, उठाकर पटक दे। चटधा गिड़धा, चटधा गिड़धा, चटधा गिड़धा अर्थात आजा भिड़ जा, आजा भिड़ जा, आजा भिड़ जा। तिरकिट तिना तिरकिट तिना अर्थात दाँव काटो बाहर हो जा ,दाँव काटो बाहर हो जा आदि।

29 माता-पिता की मृत्यु के बाद वह अनाथ हो गया और उसका पालन-पोषण विधवा सास ने किया।श्यामनगर दंगल में चाँदसिंह को कुश्ती में पछाड़कर वह राज-दरबार का स्थायी पहलवान बना। 15 वर्ष बाद राजा की मौत के बाद राजकुमार ने उसे दरबार से हटा दिया और वह अपने गाँव लौट आया।कुछ दिनों गाँववालों ने भारण -पोषण का दायित्व लेकर बाद में हाथ ख़ींच लिया। अपने पुत्रों की मौत के चार-पाँच दिन बाद वह भी मृत्यु को प्राप्त हुआ।

30 लुट्टन पहलवान की ढोलक का पूरे गाँव पर असर पड़ता था । ढोलक की आवाज से रात का सन्नाटा और भय कम होता था।महामारी से पीड़ित अधमरे-से लोगों की नसों में एक उत्तेजना-सी फ़ैल जाती थी।बूढ़े-बच्चे-जवान सभी की आँख़ों के सामने दंगल का दृश्य और उत्साह नाचने लगता था।मरने वालों को मौत से डर नहीं लगता था,वे आराम से मर जाते थे।इस प्रकार ढोल की आवज उनके जीवन के कष्टों को कम कर देती थी।

31 जीजी ने इन्दर सेना पर पानी फ़ेंके जाने को एकदम सही ठहराया। जीजी की मान्यता थी कि देवता से कुछ पाने के लिए पहले कुछ दान और कुछ त्याग करना पड़ता है।किसान पाँच-छह सैर अनाज बीज के रुप में त्यागता है,तब उसे ख़ेतों में से 30-40 मन अनाज प्राप्त होता है।इसी तरह इन्दर सेना को पानी देने से इन्द्र भगवान प्रसन्न होंगे और धरती पर झमाझम बारिश करेंगे। अतः इन्दर सेना पर पानी फ़ेंकना एकदम उचित है।

32 इन्दर सेना सबसे पहले गंगा मैया की जय बोलती है क्योंकि गंगा भारतीय समाज और जीवन के धर्म का मूल आधार है,वह मोक्षादत्री है,पालनहारी है और है जीवनदायिनी। भारीय समाज में नदियों को मां माना जाता रहा है क्योंकि वे माँ के समान ही हमारा जीवन सँवारती

है,जविन को सरस बनाती है,खेतों को सींचती है,हमरे पीने-नहाने-धोने का पानी उपलब्ध कराती हैअमारी मौत के बाद भी नदयिों में हमारी अस्थयिां मोक्षार्थ प्रवाहति की जाती है आदि।

33 चार्ली चैप्लनि का भारतीयकरण राजकपुर को कहा गया है क्योंकि चार्ली की अनेक फ़लि्मों को राजकपूर ने भारतीय परविेश में ढालकर बनाया और दर्शकों के बीच लोकप्रयिता पाई।जैसे-श्री 420,अनाड़ी,मेरा नाम जोकर आदि।

34 लेखक ने कालजयी अवधूत शरिीष को कहा है क्योंकि जैसा प्रकार अवधूत सर्दी ,गर्मी और बारशि कसिी भी मौसम में शरीर की परवाह कएि बगैर ईश्वर-आराधना में लगा रहता है और हदय की कोमलता को सुरक्षति बनाए रखता है ;ठीक वैसे ही शरिीष भी प्रत्येक मौसम- सर्दी ,गर्मी और बारशि कसिी में भी हमेशा हरा-भरा बना रहता है ,फूलों -फलों से लक़दक़ बना रहता है और छोटे -छोटे पेड़ -पौधों को छाया प्रदान करता है । उसका फूल लंबे समय तक काल को पराजति कर खलिा रहता है।

35 मानचत्रि पर एक लकीर खींच देने से जमीन और जनता बँट नहीं जाती है-यह कथन एकदम सत्य है। 15 अगस्त 1947 को भारत-पाक का वभिाजन कर दयिा गया और भौगोलकि दृष्टि से दोनों देशों अलग-अलग पहचान मलि गई लेकनि दोनों मुल्कों की आम जनता आज भी दलिों से अपने को अलग -अलग नहीं मानती है। सफ़यिा और सखिा बीवी आज भी लाहोर को अपना वतन मानती है तो सुनीलदास गुप्ता आज भी ढाका को अपना वतन मानता है। अटारी बार्डर पर तैनात आज भी दलि्ली को अपना वतन मानता है।

36 अंबेडकर के मत से मनुष्य की क्षमता तीन बातों पर नर्भिर करती है-शारीरकि वंश-परंपरा,सामाजकि उत्तराधकिार तथा मनुष्य के अपने प्रयत्न। क्योंकि शारीरकि वंश-परंपरा और सामाजकि उत्तराधकिार में भनि्न -भनि्न होते हुए भी अगर वह प्रयत्न करता है तो सभी से आगे नकिल सकता है और सफल हो सकता है ।

37 'सलि्वर वैडगि'कहानी दो पीढ़यिों की सोच,मूल्यों और भावनाओं के अन्तराल को दर्शाती है।जैसे-वंशीधर बाबू और कशिन दा पुरानी पीढ़ी के समर्थक हैं तो वंशीधर की पत्नी और उनके बेटे-बेटी नयी पीढ़ी के समर्थक हैं।वंशीधर अपने आदर्श कशिन दा के आदर्शों पर ही चलते हैं।वे पूजा-पाठ,धर्म-उपासना,न्याय,ईमानदारी,सत्यनष्ठिा,कर्त्तव्य परायण तथा बुजुर्गों को सम्मान देते हैं।इसके वपिरीत उनके बच्चे धन-दौलत को ही सब कुछ समझते हैं।बुजुर्गों का अपमान करते हैं,सलि्वर वैडगि की पार्टी देते हैं,फ़्रीज,टी वी,कूलर,रसोई गैस अर्र नये-नये कपड़ों को अपनी आवश्यकता मानते हैं।यशोधर बाबू के लएि ये सब'समहाऊ प्रापर' है,क्योंकि कशिन दा भी इनके वरिोधी थे।उनकी पत्नी बच्चों के साथ मलिकर ख़ुशी मनाती है,कटलेस ब्लाऊज पहनती है और

होठों पर लाली लगाती है।ये सब भी वंशीधर को ‘समहाऊ’लगता है। बच्चे अपना मकान चाहते हैं किंतु यशोधर बाबू सरकारी क्वाटर में ही अपने को सुरक्षित मानते हैं।

38 चार्ली चैप्लिन की फ़िल्में आज भी उतनी ही पसंद की जाती है जितनी चार्ली के समय की जाता थी। चार्ली की फ़िल्मों ने हर एक दर्शक को अपनी ओर खींचा है और दर्शक की वर्ग-वर्ण-भेद दीवार को तोड़ा है। चार्ली सार्वकालिक और सार्वजनीन है। वह भारत में भी उतना ही लोकप्रिय है जितनी अमरिका और यूरोप में। चार्ली की फ़िल्में मूक है फ़िर भी दर्शक को बाँधे रखती है। उनकी फ़िल्मों में आम आदमी नजर आता है। करुणा और हास्य चार्ली की फ़िल्मों की मूल पहचान है।

39 चटाई का लहंगा यशोधर बाबू की पत्नी को कहा गया है क्योंकि वह बुढ़ापे में बच्चों के साथ-साथ आधुनिक जीवन-शैली को अपनाती जा रही है। होठों पर लिपिस्टिक लगाना तथा ऊँची हिल के सेण्डिल पहनना आदि।

40 ‘जूझ’ का अर्थ है-संघर्ष।यह भाव सम्पूर्ण कथा में निहित है।कथानायक आनंद ने पाठशाला जाने के लिए संघर्ष किया। उनके संघर्ष में उसकी माँ व देसाई राव का सहयोग शामिल है।पाठशाला में भी अपने अस्तित्व का संघर्ष करके ही वह मानीटर बन सका।उसके जीवन में गणित के अध्यापक मंत्री का सहयोग रहा।कविता लिख़ने,पढ़ने,गाने में सौदलगेकर का भरपूर सहयोग रहा।रात-दिन घर,ख़ेत और पशुओं का काम करते हुए लेख़क पढ़ने और कविता लिख़ने में सफ़ल रहता है । अपने उपेक्षित जीवन को लेख़क ने संघर्ष करके ही सार्थक बनाया जो कि आज एक मिशाल है। वास्तव में आनंद का दृढ़ विश्वास,लगन,सहनशक्ति और कठोर मेहनत ही उसे संघर्ष की राह पर आगे बढ़ाते हुए एक पूर्ण सफ़ल इंसान बनाती है।

41 लेख़क के मराठी के अध्यापक मास्टर सौदलगेकर सस्वर कविता पाठ करते थे और स्वयं कविता लिख़ते भी थे।वे लय,ताल,छंद,यति-गति,आरोह-अवरोह का ज्ञान कराते थे।उनके मुख़ पर कविता के भाव देख़कर लेख़क प्रभावित हुआ। सौदलगेकर द्वारा लता पर लिख़ी गई कविता देख़कर लेख़क ने सोचा कि अपने गाँव,ख़ेत,पशु-पक्षी सभी पर कविता लिख़ी जा सकती है।उसने तुकबंदी शुरु की।पाठशाला के समारोह में काव्यपाठ करने के बाद आनंद यादव में आत्मविश्वास के जरिए कविता लिख़ने की रुचि पैदा हुई।

42‘जूझ’ का अर्थ है-संघर्ष।यह भाव सम्पूर्ण कथा में निहित है।कथानायक आनंद ने पाठशाला जाने के लिए संघर्ष किया। उनके संघर्ष में उसकी माँ व देसाई राव का सहयोग शामिल है।पाठशाला में भी अपने अस्तित्व का संघर्ष करके ही वह मानीटर बन सका।उसके जीवन में गणित के अध्यापक मंत्री का सहयोग रहा।कविता लिख़ने,पढ़ने,गाने में सौदलगेकर का भरपूर

सहयोग रहा।रात-दनि घर,ख़ेत और पशुओं का काम करते हुए लेख़क पढ़ने और कवतिा लख़िने में सफ़ल रहता है । अपने उपेक्षति जीवन को लेख़क ने संघर्ष करके ही सार्थक बनाया जो कि आज एक मशिाल है। वास्तव में आनंद का दृढ़ वश्विास,लगन,सहनशक्ति और कठोर मेहनत ही उसे संघर्ष की राह पर आगे बढ़ाते हुए एक पूरण सफ़ल इंसान बनाती है। अत; 'जूझ' शीर्षक सार्थक है ।

43 'जूझ' कहानी का नायक आनंदा जीवन-भर संघर्ष करता है और सफ़लता पाता है।उसके चरत्रि की नम्निांकति वशिषताएं हमें अच्छी लगती है-आनंदा बचपन से ही पढ़ना-लखिना चाहता था।इस हेतु वह पतिा के द्वारा उपेक्षति होने पर अपनी माँ को मनाता है और देसाई सरकार का सहयोग लेकर फ़रि से पढ़ाई शुरु करता है। आनण्दा कठोर मेहनती है। वह स्कूल से आने के बाद और जाने से पहले खेतों मे पानी देता है,गाय-भैंस चराता है । आनंदा कक्षा में बार-बार लड़कों द्वारा छेड़े जाने पर भी पढ़ाई नहीं छोड़ता है,इसे वह अपनी नयिती मान लेता है। आनंदा स्कूल में रहक्र भी गाने का शौक रखता है। मास्टर सौदलगेकर से प्रभावति होकर वह कवतिा लखिना सीखता है और उसे कवतिा के नयिमानुसार तुक-लय के साथ गाता है।

44 हां,सन्धुि घाटी सभ्यता जल-सभ्यता थी। उसमें मलि 700 कुएं नगर के लोगों को पीने का पानी उपलबढ़ा करवाते थे । खुदाई में एक वशिाल स्नानागार मलिा है जो नगर के लोगों के सामूहकि स्नान के आता था। यह स्नानागार उत्तरी और दक्षणिी दो हस्सिों मे वभिाजति है । नगर के पास बहती सधिु नदी जल का स्रोत थी । नगर के जल को नगर के बाहर नकिालने के लिए पक्की ईटों से बनी नालयिां मलिी है जो नगर की सुव्यवस्था को दर्शाती है।

45 सन्धुि सभ्यता के लोग शांत थे और संपन्नता के बावजूद सन्धुि सभ्यता में न भव्य प्रासाद है और न मंदरि।यहाँ राजाओं की समाधयिाँ भी नहीं है।यहाँ के औजार,मूरतशिल्पि,मकान,कमरे,नाव और राजा का मुकुट तक छोटा मलिा है।प्रभुत्व और दख़िावे के तेवर कहीं भी दख़िाई नहीं पड़ते। अतः यह कहना समीचीन है कि सन्धुि सभ्यता का सौंदर्य समाज पोषति था न की राज पोषति ।

46 सन्धुि सभ्यता के नगर की मुख़्य सड़क 13 फ़ीट चौड़ी हुआ करती थी।उससे जुड़ी छोटी-छोटी सड़कें तथा गलयिां होती थी।घरों के दरवाजे अन्दर की तरफ़ ख़ुलते थे।घर ईटों से बनते थे। हर घर में एक स्नानागार होता था।वशिाल स्नानागार,अन्न भण्डार होते थे।छोटी नलयिां बड़ी नालयिों में मलिती थी जनिसे होकर गंदा पानी नगर से बाहर जाता थां । नालयिां ढकी होती थी।

47 संपन्नता के बावजूद सन्धुि सभ्यता में न भव्य प्रासाद है और न मंदरि।यहाँ राजाओं की समाधयिाँ भी नहीं है।यहाँ के औजार,मूरतशिल्पि,मकान,कमरे,नाव और राजा का मुकुट तक छोटा

मिला है।प्रभुत्व और दिखावे के तेवर कहीं भी दिखाई नहीं पड़ते। अतः यह कहना समीचीन है कि सिन्धु सभ्यता में भव्यता का आडम्बर नहीं था।

48 युद्ध के दौरान आम जन जीवन पूरी तरह बिखर चुका था।भयंकर गोलीबारी से इमारतें काँप उठी थी।घर-घर में बीमारी फ़ैल चुकी थी। डाक्टर अपने मरीजों की ओर ध्यान नहीं दे पाते थे।उनके पीठ मोड़ते ही चोर-उचक्के उनकी कार/मोटर साइकिल लेकर भाग जाते थे।पाँच मिनिट के लिए घर से बाहर जाते ही चोर सामान उठा ले जाते थे,जैसे-टाइपराइटर,कालीन,बिजिली से चलने वाली गाड़ियां,कपड़े आदि को लौटाने के लिए अख़बारों में इनाम घोषित किए जाते थे।सार्वजनिक घड़ियों और टलीफ़ोन का पूर्ज़ा-पूर्ज़ा गायब कर दिया गया था।गरीबी और फ़टेहाली इतनी थी कि लोग बीमारी,भूख के साथ-साथ फ़टे-घिसे जूतों और कपड़ों में रहने को विविश थे।यदि जूता फ़ट जाता था तो उसे मोची से सिलवाने के लिए महीनों इंतजार करना पड़ता था।चीजों की इतनी कमी थी कि सब्जियों तथा अन्य ख़ाद्य सामानों के लिए घण्टों कतार में लगना पड़ता था।

49 ऐन फ़ैंक एक यहूदी बालिका है।दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान जर्मनी ने यहूदियों पर भयंकर अत्याचार किए।यहूदियों को वर्षों तक भूमिगत होकर रहना पड़ा। ऐन फ़ैंक भी छिप-छिपकर जीने वाले अभागे लोगों में से एक थी।उसने भूमिगत होने के दौरान अपने जीवन के एक-एक दुख़-दर्द को अपनी डायरी में लिख़ा।उसमें लाख़ों यहूदियों पर ढाए गए अत्याचारों की सच्ची गाथा है।

50 डायरी में लेख़क की निजी जिन्दिगी के साथ-साथ वहाँ का परिवेश भी जीवंत रुप में उभरता है। ऐन फ़्रैंक ने अपनी 'डायरी के पन्ने' में किशो जीवन की भावात्मक उथल-पुथल और अपने शरीर में आए बदलावों को सत्यतः हू-ब-हू लिख़ा है।पीटर को अपना साथी मानकर तथा किटिटी को अपनी सहेली मानकर ऐन ने जर्मन सेना के अत्याचार को ख़ुलेआम किया है।जैसे-द्वितीय विश्वयुद्ध में जर्मनी का हालैण्ड पर आक्रमण करना,जर्मनी में यहूदियों पर जर्मनिकों द्वारा घोर अत्याचार करना,यहूदी लड़कियों का बलात्कार,युद्ध के समय यहूदी शिविर में राशन-पानी,बिजिली का अभाव,टर्की की तटस्थता की घोषणा,हिटिलर का सैनिकों से साक्षात्कार,ब्रिटिन से हालैण्ड को मुक्त कराने के प्रयास,एक-एक दिन में 350 वायुयानों द्वारा 550 टन गोला-बारुद बरसाना और कुछ डच नागरिकों की ब्रिटिन के बारे में सोच आदि घटनाएं ऐन फ़्रैंक की डायरी में साकार हो उठी।

&&&&&&&&&&&&&&&&&&&&